श्री शीतलनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री शीतलनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शीतलनाथ विधान

जय बोलिये

मनसंताप के हारी,
मंगल प्रतापकारी,
सुख-शांतिकारी,
मोक्षमहल निहारी,
शुद्धात्म विहारी,
निर्दोष निर्विकारी,
जिनशासन के अधिकारी,
भक्तों को शीतलकारी,
शीतल परिणामी-शीतलधाम के स्वामी
परमपूज्य
श्री शीतलनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : अर्हत् राम रमैया...)

शीतलनाथ निराले हो, भक्तों के रखवाले।[2]
मेरे शीतल सुन्दर हैं, साँचे पूज्य दिगम्बर हैं।
भवसागर में डूबी नैया, पार लगाने वाले॥

चारों ओर अँधेरा फैला, कोई नहीं बचैया।
बहिरातम मय स्वार्थी जग में, कोई नहीं तिरैया॥
प्रभु ये बालक डूब न जाये[2], तुम बिन कौन सँभाले।
शीतलनाथ निराले हो.....॥ 1॥

कभी न मैंने तुम्हें बताये, संकट बहुत बड़े हैं।
संकट को बतलाया शीतल, मेरे निकट खड़े हैं॥
भक्त और भगवान् की जोड़ी[2], अब तो नाथ बना ले।
शीतलनाथ निराले हो.....॥ 2॥

जो शीतल तन शीतल करता, वो शीतलता कच्ची।
जो आतम को शीतल कर दे, वो शीतलता सच्ची॥
तन शीतल 'सुव्रत' ना चाहें[2], अब तो गले लगा ले।
शीतलनाथ निराले हो.....॥ 3॥

श्री शीतलनाथ विधान

स्थापना

(दोहा)

तीर्थंकर दसवे प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुये, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥

नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रन्दन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गायें।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जायें॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

जल जैसा अपना आतम पर, बना अवगुणी दुर्गति से।
शुद्ध और शीतल बन जाता, नाथ! आपकी संगति से॥
प्रासुक जल का लिया सहारा, चेतन पावन हो जाये।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

चंदन के बस दो गुण समझो, सौरभ दे तन ताप हरे।
किन्तु आपकी जिनवाणी तो, भव-भव का सन्ताप हरे॥
चंदन का अब लिया सहारा, चेतन शीतल हो जाये।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं.....।

मुट्ठी बाँधे आते हम सब, हाथ पसारे जाना रे।
किन्तु बीच में पद-लालच में, हाथ रहा पछताना रे॥
तन्दुल का अब लिया सहारा, अक्षय पद को हम ध्याये।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

आकर्षक है खिला महकता, फूल नीम का कटुक रहा।
ऐसे ही है काम सुगन्धी, जिसका फल जग भुगत रहा॥
पुष्प चढ़ा के शील-पुष्प से, मन की बगिया खिल जाये।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

भूख मिटी ना भोग मिटे ना, मिट-मिट गये सदा हम ही।
फिर भी भोगों को ना त्यागा, पायें इच्छा से कम ही॥
चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य आपको, ज्ञानामृत पर ललचाये।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

अंधों को दिन रात बराबर, मोही को यह जग वैसे।
नाथ! आपके ज्ञान दीप बिन, मिटे मोह का तम कैसे?
नेत्रों का पूरा उन्मीलन, करवा दो तम खो जाये।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

धूप जले तो मन्दिर महके, किन्तु सभी जग ना महके।
किन्तु आपके नाम मात्र से, भक्त जगत् आतम महके॥
धूप चढ़ा के कर्म जलाने, आतम महकाने आये।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

पुण्य कार्य करना ना चाहें, किन्तु पुण्य फल सब चाहें।
पाप कार्य सब करते हैं पर, पापों के फल ना चाहें॥
पाप त्यागकर पुण्य प्राप्ति को, थाल-थाल भर फल लाये।
हे शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

वसु द्रव्यों का लिया सहारा, गुण गाने की आशा से।
भाव भक्ति तो दिखा न सकते, टूटी-फूटी भाषा से॥
अर्घ्य भावमय छोटा सा पर, अनर्घ पद मन में भाये।
हे! शीतल जिनवर! हम तेरी, भक्ति अर्चना को आये॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

आरण नामक स्वर्ग लोक तज, चैत्र अष्टमी कृष्ण रही।
गर्भ सुनन्दा माँ का पाया, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व गर्भ कल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

माघ कृष्ण बारस जब आई, नगर भद्रपुर जन्म लिया।
दृढ़रथ महाराज का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व जन्म कल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

माघ कृष्ण बारस को त्यागा, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तप कल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
तप कल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पौष कृष्ण चौदस की तिथि को, घाति कर्म नशा दिये।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किये॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अश्विन शुक्ल अष्टमी संध्या, पद्मासन से कर्म नशा।
मोक्ष गये सम्मेदशिखर से, हम पायें सब यही दशा॥
अष्टकर्म का बन्धन सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

जग में क्या शीतल रहा, यही समझने बात।
जयमाला के नाम हम, ध्यायें शीतलनाथ॥

(ज्ञानोदय)

दृढ़रथ पिता सुनन्दा माँ के, शीतलनाथ पुत्र प्यारे।
धर्म-कर्म विच्छेद हुआ तो, स्वर्ग लोक से अवतारे॥
नब्बे धनुष उच्च कंचन सा, तीर्थंकर तन प्राप्त किया।
अनुपम सुखदा पूज्य पिता का, पद पाकर के राज्य किया॥ 1॥

वन विहार को कभी गये तो, हिम-पाला देखा वन में।
किन्तु क्षणिक वह नष्ट हुआ तो, जल्दी वैरागे मन में॥
क्षण-क्षण नश्वर देख जगत् को, मोह बंध तजने मचले।
राग-द्वेष आदिक दोषों को, शीघ्र त्यागने को निकले॥ 2॥

दुखी और दुख, दुख के कारण, समझ इन्हें अब तजना है।
सुखी और सुख, सुख के कारण, समझ इन्हें अब भजना है॥

विषय भोग में यदि सुख होता, तो मैं सबसे बड़ा सुखी।
किन्तु मुझे संतोष तनिक ना, इनसे तो मैं हुआ दुखी॥ 3॥

विषय भोग से जो सुख माने, वह सुख मिथ्या है भ्राता।
ये ही सुखाभास चेतन को, भव गलियों में भटकाता॥
देह जेल में यथा बँधे ज्यों, पिंजड़े में पक्षी तोता।
बँधा हुआ खम्भे से हाथी, रोता सदा दुखी होता॥ 4॥
उदासीन जग से होना ही, साँचा सुख वह कहलाता।
मोह त्याग बिन वह साँचा सुख, कौन तपस्या बिन पाता?
राज्य भोग सब मोह त्यागकर, जल्दी दीक्षा ले डाली।
केवलज्ञान प्राप्त करने को, घाति कर्म रज हर डाली॥ 5॥

दोष अठारह नशा दिये तो, समवसरण में शोभित हो।
भक्तों के तारक तीर्थंकर, त्रय लोकों में पूजित हो॥
हे जिन सूरज! शीतलस्वामी, हमें भक्ति फल बस यह दो।
सम्यक् श्रद्धा रहे आपमें, 'सुव्रत' को संबल यह दो॥ 6॥

(दोहा)

भक्ति वन्दना से खिले, शिव अंकुर वैराग्य।
हे जिन! शीतल छाँव में, पले बढ़े सौभाग्य॥
शीतल प्रभु को पूजकर, होते भक्त निहाल।
सही गलत को जानकर, छोड़ें जग जंजाल॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं ....।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

प्रथम वलय पूजन

स्थापना

तीर्थंकर दसवें प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुये, सभी भक्त नत माथ॥
हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥
नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रन्दन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गायें।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जायें॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर .....।
ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः .....।
ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं.....)

अपने स्वरूप को जल पाता, कृपा किसी की पा जैसे।
अगर आपकी कृपा रही तो, हम पायें आतम वैसे॥
चढ़ा-चढ़ा इस प्रासुक जल को, हमको भी पावन बनना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

आग पेट की भोजन हरता, क्रोध आग की क्षमा हरे।
धाँय-धाँय भोगों की ज्वाला, सम्यक् संयम शांत करे॥
चढ़ा-चढ़ा सुरभित चंदन को, हमको भी शीतल बनना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं.....।

जड़ जोरू जमीन के खातिर, धर्म भूलते हम अपना।
ख्याति पूजा लाभ प्राप्ति को, गैरों को देते दफना॥
चढ़ा-चढ़ा उज्ज्वल अक्षत् को, हमको भी अक्षय बनना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

जब तक माला गूँथी जाती, तब तक खुशबू उड़ जाती।
जीवन की बगिया सद्गुण के, सौरभ से ना भर पाती॥
पुष्प चढ़ा के काम नशा के, हमको भी सुरभित बनना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं.....।

अब तक हमने सब कुछ खाया, किन्तु कभी गम ना खाया।
इसीलिये तो गम का सागर, भरा लबालब लहराया॥
चढ़ा-चढ़ा नैवेद्य आपको, क्षुधा रोग हमको हरना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

सबसे सुन्दर जीवन मंदिर, किन्तु मोह का अंध भरा।
ज्ञान रोशनी भर जाये तो, चमक उठेगा रूप खरा॥
करें आरती दीपक से हम, हमको भी उज्ज्वल बनना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं.....।

सब हो जाता मजा किरकिरा, मिले खीर में धूल जहाँ।
आतम का हो रहा किरकिरा, मिले कर्म की धूल जहाँ॥

चढ़ा-चढ़ा के धूप सुगंधी, कर्म धूल हमको हरना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

लोग परीक्षा से डर जाते, किन्तु चाहते फल अच्छे।
बिना परीक्षा किसने पाये, मधुर फलों के दल गुच्छे॥
चढ़ा-चढ़ा इन प्रासुक फल को, हमको भी शिवफल वरना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

आठों द्रव्यों के मिलने पर, अर्घ्य बना यह मनहारी।
अगर मिले प्रभु भक्ति सहारा, मिले मुक्ति की झट गाड़ी॥
चढ़ा-चढ़ा यह अर्घ्य आपको, हमको भी अनर्घ बनना।
कृपा करो हे शीतल स्वामी!, मिले पाँचवी गति गहना॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनःसंसारचक्रविमुक्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

प्रथम वलय अर्घ्यावली

(चतुर्गति वर्णन)

हिंसा चोरी निंदा करना, कुशील या लालच करना।
बात-बात पर शोक मनाना, कटुक झूठ भाषण करना॥
बहु आरंभ परिग्रह ज्यादा, क्रोध मान माया करना।
दुर्बुद्धिक आदिक जीवों को, नरकों में जा दुख सहना॥

जीव नारकी शारीरिक दुख, क्षेत्र मानसिक दुख सहते।
उन्हें असुरकुमार लड़वाते, और परस्पर भी लड़ते॥
सात प्रकारी नरकों के दुख, नाथ! कभी ना हम पायें।
इसीलिये हे! शीतल जिनवर, भक्त आपके गुण गायें॥ 1॥

ॐ ह्रीं नरकगतिसम्बन्धिदुःखनिवारणाय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

धर्म कथन में प्रचार करना, मिला-मिला मिथ्यावाणी।
अन्य जनों के दोष खोजना, आर्त्त ध्यान के जो ध्यानी॥
लेश्यायें कापोत नील हों, शील रहित जीवन जीना।
कुटिल भाव मायाचारी से, पशुगति में जा दुख पीना॥
तिर्यंचों में पाँचों इन्द्री, वध-बंधन दुख घोर सहें।
छेदन-भेदन ताड़न पीसन, भूखे प्यासे मार सहें॥
दुखदायक तिर्यंच योनि के, कष्ट कभी ना हम पायें।
इसीलिये हे! शीतल जिनवर, भक्त आपके गुण गायें॥ 2॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिसम्बन्धिदुःखनिवारणाय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विनीत बनना सरल स्वभावी, अल्प कषायों का होना।
अल्पारंभ परिग्रह कम हो, मरण समय में ना रोना॥
भद्ररूप व्यवहारवान हों, मृदुता के हों आचारी।
इन भावों वाले जो प्राणी, मानव बनते संसारी॥
मनुष्यगति में सम्मूर्च्छन दुख, गर्भों में सिकुड़न सहना।
जनम मरण की पीड़ा सहना, योग वियोगों को सहना॥
रोग शोक मय मानव गति के, योग कभी ना हम पायें।
इसीलिये हे! शीतल जिनवर, भक्त आपके गुण गायें॥ 3॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिसम्बन्धिदुःखनिवारणाय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सरागसंयम पालन करना, तथा संयमासंयम भी।
कहा बालतप कुटिल भाव से, व्यर्थ व्रतों का पालन ही॥
वही अकाम निर्जरा समझो, जो परवश व्रत पालन हो।
इन कारण से मिले देवगति, जहाँ प्राणियों को दुख हो॥
विषय-भोगसुख देवलोक में, दुख के कारण बन जाते।
मिले मानसिक तीव्र वेदना, असमय में ना मर पाते॥
दुख संताप देवगति वाले, नाथ! कभी ना हम पायें।
इसीलिये हे! शीतल जिनवर, भक्त आपके गुण गायें॥ 4॥

ॐ ह्रीं देवगतिसम्बन्धिदुःखनिवारणाय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रथम वलय जयमाला

सबकी गोद निगोद मानिए, जनम मरण के कष्ट जहाँ।
पृथ्वी जल तरु आग पवन ये, हमको बनना इष्ट कहाँ?
नहीं नहीं दो तीन चार या, पंचेन्द्रिय तिर्यंच बनें।
नहीं नारकी देव बनें ना, धरम बिना ना मनुज बनें॥ 1॥

द्रव्य क्षेत्र भव काल भाव ये, पाँचों परिवर्तन सहके।
फिरे हमारा आतम भव-भव, सदा मिले दुख के झटके॥
देव शास्त्र गुरुओं को पाकर, मानव भव ना धन्य किया।
केवल अपना स्वारथ साधा, ना ही उत्तम दान दिया॥ 2॥

रत्नत्रय के बिना जगत् की, सारी बाधायें झेलीं।
और कषायों के वश होकर, पापों की होली खेलीं॥
कृपा आपकी नाथ! मिली तो, भाग्य हमारा जाग गया।
भक्ति अर्चना करके स्वामी, मन का कल्मष भाग गया॥ 3॥

भक्ति आपकी करके हमको, इतना है विश्वास विभो।
चउ गतियों का दुख छूटेगा, भटकेगा ना दास प्रभो॥
बनकर हम भी आप सरीखे, पंचम गति को पायेंगे।
किंतु मिले जब तक ना शिव सुख, भजन आपके गायेंगे॥ 4॥

(दोहा)

चारों गति के दुख मिटें, पंचमगति हो प्राप्त।
मात्र लक्ष्य यह पूर्ण हो, हे शीतलजिन! आप्त॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिसम्बन्धिनदुःखनिवारणाय सिद्धगतिप्राप्तये श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

द्वितीय वलय पूजन

स्थापना

तीर्थंकर दसवें प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुये, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥
नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रंदन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गायें।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जायें॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर.....।
ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः.....।
ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं.....)

तन के इस मन्दिर में देखो, रोग विराजे बन स्वामी।
लगी आतमा को बीमारी, जनम-मरण की दुखदानी॥
रत्नत्रय औषध दो हमको, शीतल प्रभु करुणाधारी।
प्रासुक जल से पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

नाम आपका शीतल-शीतल, काम धाम सब शीतल हैं।
भक्त आपको याद करें जो, वे हो जाते शीतल हैं॥
भव-संताप हमारा हर लो, शीतल प्रभु करुणाधारी।
चंदन द्वारा पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दन.....।

बना आपको जिसने स्वामी, अपने उर में धार लिया।
उसने जग-वैभव को तज के, भव सागर को पार किया॥
अक्षय पद हमको दिलवा दो, शीतलप्रभु करुणाधारी।
तन्दुल द्वारा पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

फूल मसलने वालों को भी, वही फूल सुरभित करते।
किन्तु नाथ! उपकारों को भी, निन्दित-निन्दित हम करते॥
दो चारित्र सुगंधी हमको, शीतलप्रभु करुणाधारी।
मन सुमनों से पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

आशा गर्त कभी ना भरता, नहीं दिखे इन आँखों से।
तन की भूख तनिक सी लेकिन, नहीं मिटे इन फाँकों से॥
क्षुधारोग का दुख हर लीजे, शीतलप्रभु करुणाधारी।
नैवेद्यों से पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

दीया तले अँधेरा वाला, खूब हमें उपदेश मिला।
स्व-पर प्रकाशी ज्ञान दीप बिन, नहीं किसी का हुआ भला॥
महामोह अँधयारा हर लो, शीतलप्रभु करुणाधारी।
दीपक द्वारा पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

ठोस हथौड़ों की मारों से, हीरे का कुछ ना बिगड़े।
किन्तु आग से राख बनें पर, कर्मों का कुछ ना बिगड़े॥
चूर-चूर सब कर्म करा दो, शीतलप्रभु करुणाधारी।
धूप गंध से पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

कटुक विषैले बीजों को बो, सरस मधुर फल सब चाहें।
जो बोयेगा वो काटेगा, तथ्य भूल भरते आहें॥

शक्ति कर्म फल सहने को दो, शीतलप्रभु करुणाधारी।
प्रासुक फल से पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

नीरादिक आठों द्रव्यों का, मिला रूप ही अर्घ्य कहा।
छोटा दिखता पर अनर्घ पद, दिलवाने में दक्ष रहा॥
अनर्घ पद हमको दिलवा दो, शीतलप्रभु करुणाधारी।
अहो! अर्घ्य से पूज आपको, स्वस्थ बनें हम संसारी॥

ॐ ह्रीं परमशुद्धदशाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

द्वितीय वलय अर्घ्यावली (आठ शुद्धियाँ)

राग-द्वेष आदिक दोषों बिन, आत्म भाव जो शुद्ध रहे।
भाव-शुद्धि या मनो शुद्धि वह, ज्ञानी संत प्रबुद्ध कहे॥
भाव-शुद्धि सुख शांति द्वार वह, भक्त आपके हम पायें।
जय हो! जय हो! शीतल जिनवर, शीश झुका हम गुण गायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मनोविकारनाशक भावशुद्धिप्राप्तये अर्घ्यं.....।

भाव शुद्धि होने पर काया, यथाजात हो अविकारी।
प्रशांत मूरत काय शुद्धि वह, अभय कहे गुरु अनगारी॥
काय शुद्धि मय रत्नत्रय वह, भक्त आपके हम पायें।
जय हो! जय हो! शीतल जिनवर, शीश झुका हम गुण गायें॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कायविकारनाशक कायशुद्धिप्राप्तये अर्घ्यं.....।

देव-शास्त्र-गुरुओं के गुण में, जो अनुराग रहा साँचा।
भाव भक्ति ही विनय शुद्धि वह, नर भूषण प्रभु ने वाँचा॥
विनय शुद्धि गुरु आज्ञा पालन, भक्त आपके हम पायें।
जय हो! जय हो! शीतल जिनवर, शीश झुका हम गुण गायें॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मदविकारनाशक विनयशुद्धिप्राप्तये अर्घ्यं.....।

सूर्य प्रकाशित चार हाथ भू, देख-देख विधिवत् चलना।
मुनि ईर्यापथ शुद्धि उसी से, झरे अहिंसा का झरना॥
वह ईर्यापथ शुद्धि पालना, भक्त आपके हम पायें।
जय हो! जय हो! शीतल जिनवर, शीश झुका हम गुण गायें॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय हिंसाविकारनाशक ईर्यापथशुद्धिप्राप्तये अर्घ्यं.....।

आगम के अनुसार जानकर, भोजन करना समता से।
निर्मल भिक्षा शुद्धि पाँच विध, बतलायी सज्जनता से॥
चरित संपदा भैक्ष्य शुद्धि वह, भक्त आपके हम पायें।
जय हो! जय हो! शीतल जिनवर, शीश झुका हम गुण गायें॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय रोगविकारनाशक भैक्ष्यशुद्धिप्राप्तये अर्घ्यं.....।

देश काल को जान देह के, मल मूत्रादिक तज देना।
वह उत्सर्ग शुद्धि है सुखकर, जीवों को ना दुख देना॥
वह उत्सर्ग शुद्धि का पालन, भक्त आपके हम पायें।
जय हो! जय हो! शीतल जिनवर, शीश झुका हम गुण गायें॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय लाञ्छनविकारनाशक प्रतिष्ठापनशुद्धिप्राप्तये अर्घ्यं...।

यतन और आगममय वसना, सोना और खड़े रहना।
वही शुद्धि शयनासन होती, जिससे पड़े न दुख सहना॥
महाशुद्धि शयनासन सौरभ, भक्त आपके हम पायें।
जय हो! जय हो! शीतल जिनवर, शीश झुका हम गुण गायें॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय निद्रावासनाविकारनाशक शयनासनशुद्धिप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पापादिक से रहित प्रेरणा, पीर हरे जो जिनवाणी।
हित मित आगममय मधु भाषण, वचन शुद्धि जगकल्याणी॥
वचन शुद्धि से वचन सिद्ध वह, भक्त आपके हम पायें।
जय हो! जय हो! शीतल जिनवर, शीश झुका हम गुण गायें॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मन्दबुद्धिविकारनाशक वचनशुद्धिप्राप्तये अर्घ्यं.....।

द्वितीय वलय जयमाला

सारा जग चिल्लाता रहता, शुद्ध-बुद्ध हम झलक रहे।
खाओ पीओ मौज करो सब, ये आतम से अलग रहे॥
किन्तु पसीना आ जाता है, एक नियम व्रत पालन में।
बिना नियम व्रत पालन करके, कौन शुद्ध हो जीवन में॥ 1॥

आठ शुद्धियों के साधन पर, जो साधक विश्वास करें।

क्रमशः उनका पालन करके, भाव-विकारी नाश करें॥
मात्र शुद्धियों की चर्चा से, शुद्ध-बुद्ध ना आतम हो।
बिन अर्चा के बस चर्चा से, खुद को पर को मातम हो॥ 2॥

बिन पानी सोड़ा धोबी के, कपड़े ना चमकें जैसे।
वैसे नाथ! आपकी थुति बिन, चेतन गुण चमकें कैसे?
बाहर का जब निमित्त पाता, तो कपड़ा निज मैल हरे।
देव-शास्त्र-गुरुओं की पद रज, त्यों आतम को शुद्ध करे॥ 3॥

करो कृपा हे शीतलस्वामी, पुण्य उदय हो भक्तों का।
मिले शुद्धियों का साधन फिर, पाप विलय को भव्यों का॥
शीतलधाम हमारा होवे, शीतल जिनवर के हम हों।
तभी चेतना शुद्ध बनेगी, मनमाने जब भ्रम कम हों॥ 4॥

परम शुद्ध आतम बने, नशें भरम के मैल।
करुणा शीतलनाथ की, दे मंजिल शिव गैल॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय शुद्धात्मदशाप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

तृतीय वलय पूजन

स्थापना

तीर्थंकर दसवें प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुये, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥
नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रंदन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गायें।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मन्दिर में वस जायें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर.....।
ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः.....।
ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं.....)

कष्ट जनम का सहते क्यों हम, दुखी बुढ़ापा होता क्यों?
केवल नाम मौत का सुनकर, मरने से जग रोता क्यों?
बीज वृक्ष की परम्परा की, पीर नीर से हनन करें।
शीतलप्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

सब अपना सौरभ खोते जब, समता का चंदन महके।
भक्ति-भाव के सुंदर वन से, चंदन लाये हम चुनके॥
विश्व ताप समता चंदन से, भक्त आपके हनन करें।
शीतल प्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

जो कुछ हमने पाया उससे, हम संतुष्ट नहीं होते।
आधी छोड़ झपटते पूरी, दोनों खोकर फिर रोते॥
जो कुछ मिले खुशी से उसको, अक्षय बनने वरण करें।
शीतल प्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

जिसे भोगकर यह जग सारा, पुष्प सरीखा फूल रहा।
कथा कहानी पल भर की पर, काम रोग दुख मूल रहा॥
काम रोग की ये बीमारी, पुष्प चढ़ा हम हरण करें।
शीतल प्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं...।

साँचे प्रभु का सुधा पिया ना, दुर्देवों का जहर पिया।
इसीलिए तो महाभयंकर, रूप घिनौना बना जिया॥
क्षुधा रोग नैवेद्य चढ़ाकर, ज्ञानामृत से शमन करें।
शीतल प्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

जैसे-जैसे दीप जलाये, वैसे-वैसे अंध बढ़ा।
जैसे-जैसे मोह घटाया, वैसे-वैसे द्वन्द्व बढ़ा॥
ज्ञान ज्योति दो हमको भगवन्, हम अघ तम का भरम हरें।
शीतल प्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

हम निमित्त पर ऐसे टूटें, श्वान दण्ड पर ज्यों टूटे।
द्रव्य भाव नो कर्मों द्वारा, भाग्य हमारे हैं फूटे॥
धूप चढ़ाकर शेर सरीखे, अष्ट दुष्ट सब करम हरें।
शीतल प्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

जग संकल्प विकल्पों द्वारा, पापों का व्यापार करे।
जिसका फल आकुल व्याकुल हो, आतम का संसार बढ़े॥
चिदानंद फल शांत निराकुल, पूजा का फल धरम धरें।
शीतल प्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्त्ये फलं.....।

पूजन में भी आठ द्रव्य हैं, और कर्म भी आठ रहे।
पूज्य बनो या पूजन कर लो, तो ही जग में ठाठ रहे॥

पूजक ही पद पूज्य प्राप्त कर, मुक्ति रमा का वरण करें।
शीतल प्रभु के पद पंकज को, ध्यान लगाकर नमन करें॥

ॐ ह्रीं ध्यानातीतावस्थाप्राप्त श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

तृतीय वलय अर्घ्यावली

(16 ध्यान वर्णन)

इष्ट वस्तु जन के बिछुड़न से, जो दुख का अनुभव होता।
उसको पाने बार-बार चित, आकुल-व्याकुल हो रोता॥
इष्ट वियोगज आर्त्तध्यान वह, दुःखों का कारण तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 1॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय इष्टवियोगजनामा आर्त्तध्याननिवारणाय अर्घ्यं.....।

अनिष्ट का संयोग हुआ तो, उससे जो होती पीड़ा।
उसको दूर हटाने प्राणी, नानाविध करता क्रीड़ा॥
अनिष्ट संयोगज नामा वह, आर्त्तध्यान भव-विष तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनिष्टसंयोगजनामा आर्त्तध्याननिवारणाय अर्घ्यं.....।

तन में अगर रोग उपजें तो, होता कष्ट उसी से जो।
उसे दूर करने को रोगी, बार-बार कुछ सोचे जो॥
पीड़ा चिन्तन आर्त्तध्यान वह, खारा गम सागर तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पीड़ाचिन्तननामा आर्त्तध्याननिवारणाय अर्घ्यं.....।

सांसारिक भोगों की इच्छा, हो आगामी कालों में।
करते उथल-पुथल वो पाने, भोगी ही हर हालों में॥
निदान नामा आर्त्तध्यान वह, पवन द्वार हमको तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय निदाननामा आर्त्तध्याननिवारणाय अर्घ्यं.....।

मार पीट आतंक मचाना, छेद भेद ताण्डव करना।
हिंसा में आनंद मनाना, क्रूर भाव मन में धरना॥

हिंसानंद नाम दुखदायी, रौद्र ध्यान हमको तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय हिंसानन्दनामा रौद्रध्याननिवारणाय अर्घ्यं.....।

झूठ बोलकर या बुलवाकर, या कर वाह! वाह! उनकी।
पथ भ्रम कर आनन्द मनाना, गाँठ बाँधना अवगुण की॥
रौद्र असत्यानंद ध्यान या, मृषानंद हमको तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मृषानन्दनामा रौद्रध्याननिवारणाय अर्घ्यं.....।

चोरी करना या करवाना, या चोरों के गुण गाना।
चोरी में आनंद मनाना, भाव भयंकर उर लाना॥
चौर्यानन्द नाम पीड़ा का, रौद्र ध्यान हमको तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय चौर्यानन्दनामा रौद्रध्याननिवारणाय अर्घ्यं.....।

वस्तु परिग्रह के संचय में, या संचित के रक्षण में।
संग्रह में आनन्द मनाना, मार कुण्डली क्षण-क्षण में॥
परिग्रहानन्द रौद्र ध्यान वह, शांति विनाशक पद तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय परिग्रहानन्दनामा रौद्रध्याननिवारणाय अर्घ्यं.....।

जीव कर्म या बंध मोक्ष जो, आँखों से ना दिखे कभी।
इन विषयों पर जिन आज्ञा से, श्रद्धा निश्चय करें सभी॥
ऐसा चिन्तन धर्मध्यान वह, आज्ञा विचय हृदय धरना।
इसीलिए मन के मंदिर में, शीतलप्रभु के पद भजना॥ 9॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय आज्ञाविचयनामा धर्मध्यानप्राप्तये अर्घ्यं.....।

मिथ्यादर्शन मिथ्याचारित, मिथ्याज्ञान भरे प्राणी।
कैसे इनका दुःख दूर हो, कैसे पायें जिनवाणी॥
ऐसा चिंतन धर्मध्यान वह, अपाय विचय प्रेम झरना।
इसीलिए मन के मन्दिर में,शीतलप्रभु के पद भजना॥ 10॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अपायविचयनामा धर्मध्यानप्राप्तये अर्घ्यं.....।

अपने-अपने कर्मोदय से, सुख-दुख दुनियाँ भोग रही।
जैसी करनी वैसी भरनी, जो बोये वो काट रही॥
ऐसा चिंतन धर्मध्यान वह, विपाक विचय रहा शरणा।
इसीलिए मन के मंदिर में,शीतलप्रभु के पद भजना॥ 11॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय विपाकविचयनामा धर्मध्यानप्राप्तये अर्घ्यं.....।

किस विध कैसे तीन लोक हैं, क्या-क्या भरा हुआ इसमें।
क्या आकार रूप क्या इसका, भटके क्यों प्राणी इसमें॥
ऐसा चिंतन धर्मध्यान वह, है संस्थान विचय गहना।
इसीलिए मन के मंदिर में,शीतलप्रभु के पद भजना॥ 12॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संस्थानविचयनामा धर्मध्यानप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्रुतज्ञान में अर्थ वचन की, तथा योग संक्रांती जो।
निरोध चिन्ता का होने पर, हरता मन की भ्रांति जो॥
शुक्ल ध्यान वह पहला समझो, उसको पाने जग तजना।
इसीलिए मन के मन्दिर में,शीतलप्रभु के पद भजना॥ 13॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पृथक्त्ववितर्कवीचारनामा प्रथमशुक्लध्यान प्राप्तये अर्घ्यं...।

शुक्लध्यान त्रय योगों में से, किसी एक के साथ हुआ।
जो संक्रांती रहित रहा है, उससे चेतन साफ हुआ॥
शुक्लध्यान वह दूजा समझो, उसको पाने जग तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में,शीतलप्रभु के पद भजना॥ 14॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय एकत्ववितर्क-अवीचारनामा द्वितीयशुक्लध्यानप्राप्तये...।

आयु कर्म जब सयोगि प्रभु का, अन्तर्मुहूर्त शेष रहा।
मन वच बादर काय योग तज, सूक्ष्म काय का योग रहा॥
शुक्ल ध्यान वह तीजा समझो, उसको पाने जग तजना।
इसीलिए मन के मंदिर में,शीतलप्रभु के पद भजना॥ 15॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिनामा तृतीय शुक्लध्यानप्राप्तये अर्घ्यं.....।

ध्यान अवस्था योग रहित जो, अयोग केवलि प्रभु पाते।
पंच ह्रस्व वर्णोच्चारण का, अल्प समय वह बतलाते॥

शुक्ल ध्यान चौथा ज्यों छूटे, मिले मुक्ति रानी ललना।
इसीलिए मन के मंदिर में,शीतलप्रभु के पद भजना॥ 16॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय व्युपरतक्रियानिवृत्तिनामा चतुर्थ शुक्लध्यानप्राप्तये अर्घ्यं.....।

तृतीय वलय जयमाला

चार प्रकारी ध्यान जगत् में, संसारी प्राणी ध्याते।
आर्त्त-रौद्र तो भव के कारण, धर्म शुक्ल से शिव पाते॥
तभी हमें जिन-संत बताते, आर्त्त-रौद्र का त्याग करो।
धर्म ध्यान को ध्याकर बंदे, शुक्लध्यान से राग करो॥ 1॥

ध्यान लगाना नहीं सीखना, ध्यान तोड़ना गर सीखे।
आर्त्त ध्यान को छोड़ दिया तो, धर्म शुक्ल होंगे नीके॥
ध्यान शिविर तो खूब लगाये, शास्त्र पठन भी खूब हुआ।
किन्तु रूप स्वरूप ना समझा, तो सब प्रक्रम व्यर्थ हुआ॥ 2॥

चर्चा त्यागो बहुत हो गयी, क्रमबद्ध पर्यायों की।
प्रभु अर्चा कर चर्चा कीजे, क्रमबद्ध स्वाध्यायों की॥
बिना आचरण शास्त्र ज्ञान सब, भार बना प्राणी ढोते।
अल्पज्ञान गर चरित सहित तो, मोक्षमहल में भवि होते॥ 3॥

शीतलप्रभु का गीत गान कर, आर्त्त रौद्र दुर्ध्यान तजें।
चरण-शरण में धर्म ध्यान कर, शुक्ल ध्यानमय ज्ञान भजें॥
उपादेय क्या और हेय क्या?, जान सकें करके पूजा।
ध्यानातीत दशा पाने को, सदा मिले प्रभु जिनपूजा॥ 4॥

शीतलप्रभु के गीत गा, मिले सदा सम्मान।
धर्म शुक्ल का धन मिले, नश जायें दुर्ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय ध्यानातीतदशाप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, हे शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

चतुर्थ वलय पूजन

स्थापना

तीर्थंकर दसवे प्रभो, जिनवर शीतलनाथ।
उद्यत गुण गाने हुये, सभी भक्त नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

हे शीतलप्रभु! हे शीतलप्रभु!, शीतल-शीतल सदा करो।
जो भी रटते नाम आपका, उनकी भव-दुख व्यथा हरो॥
कर्मों के संताप आपके, नाम मात्र से शीतल हों।
दशों दिशाएँ पावन होतीं, कण-कण सुरभित मंगल हों॥

नाथ! आपके दर्शन करके, तन-मन पुलकित हो जाता।
चरण-शरण में भक्त जनों का, आक्रंदन अघ खो जाता॥
हमें भक्ति का मिला सहारा, तो हम गुण क्यों ना गायें।
सुन लो विनती नाथ! हमारे, मन मंदिर में वस जायें॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर.....।
ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः.....।
ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं.....)

प्रासुक जल यह अर्पण करके, दर्पण सम चेतन होते।
शीतल प्रभु के पूजक जग में, रोग शोक अपने खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

सुरभित चंदन से वंदन कर, वंदन योग्य भक्त होते।
शीतल प्रभु के पूजक जग में, भवाताप अपने खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

अक्षत तंदुल अर्पण करके, अक्षय पद चेतन होते।
शीतलप्रभु के पूजक जग में, क्षणभंगुर वैभव खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

शुद्ध पुष्प ये अर्पण करके, पुष्प समा चेतन होते।
शीतलप्रभु के पूजक जग में, काम-बाण अपने खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

ये नैवेद्य समर्पण करके, अमृत सम चेतन होते।
शीतलप्रभु के पूजक जग में, क्षुधा रोग अपने खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधरोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

दीप ज्योति से आरति करके, ज्ञान-सूर्य चेतन होते।
शीतलप्रभु के पूजक जग में, अघ अज्ञान तिमिर खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

धूप सुगंधी अर्पण करके, चरितवान् चेतन होते।
शीतलप्रभु के पूजक जग में, कर्म धूल अपनी खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

प्रासुक फल ये अर्पण करके, मंगलमय चेतन होते।
शीतलप्रभु के पूजक जग में, दल-दल कर्मों का खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

प्रासुक अर्घ्य समर्पण करके, जगत् पूज्य चेतन होते।
शीतलप्रभु के पूजक जग में, जगत्-चक्र अपना खोते॥

ॐ ह्रीं महोभयवैभवसम्पन्न श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

चतुर्थ वलय अर्घ्यावली

(अनंतचतुष्टय वर्णन)

दर्शन आवरणी के कारण, दिखे नहीं सब सच्चाई।
दृष्टि मिली पर भटक रहे हम, सम्यक् राह नहीं पायी॥

आप दर्शनावरणी हरकर, अनंतदर्शन गुण पाये।
लोकालोक दिखाने वाला, गुण पाने हम ललचाये॥ 1॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्ञानावरणी यों ढाके ज्यों, मेघों से सूरज ढकता।
तभी हिताहित ज्ञान न पाके, जीव बावला सा दिखता॥
ज्ञानावरणी कर्म नष्ट कर, आप अनंतज्ञान पाये।
लोकालोक जानने वाला, गुण पाने हम ललचाये॥ 2॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मोह कर्म से यों गाफिल ज्यों, मदिरा पी बानर होते।
अनन्त सुख के स्वामी हैं पर, सांसारिक दुख पा रोते॥
मोहनीय का दर्प नशा तुम, क्षायिक सम्यक् गुण पाये।
अनंतसुख दिलवाने वाला, गुण पाने हम ललचाये॥ 3॥

ॐ ह्रीं क्षायिकसम्यक्त्वमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अंतराय कर्मों से हम सब, दीन हीन कमजोर हुये।
अनंत बल हमने पाया पर, परवश हो चकचूर हुये॥
अंतराय की शक्ति हरण कर, अनंतवीरज गुण पाये।
अनंतवीर्य दिलाने वाला, गुण पाने हम ललचाये॥ 4॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(अष्टप्रातिहार्य वर्णन)

रत्नों का देवों से निर्मित, आकर्षक जो चमक रहा।
हरा-हरा है अशोक तरुवर, ताप शोक उपशमक रहा॥
समवसरण में अशोक तरुतल, आप जिनेश्वर शोभ रहे।
किन्तु भक्त हम शीतलप्रभु को, देख-देख सुख भोग रहे॥ 5॥

ॐ ह्रीं अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पुष्प अलौकिक स्वर्गों वाले, रंग-बिरंगे वरस रहे।
दिव्य गंध को तितली भौंरे, सूँघ-सूँघ सब हरस रहे॥

समवसरण में पुष्पवृष्टि से, शीतलप्रभु का यश महके।
नाँच-नाँच मन मोर हमारा, झूम-झूम पद में चहके॥ 6॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सजे धजे आभरणों से सुर, चौंसठ चमर ढुराते हैं।
दोष रहित सर्वज्ञ देव की, महिमा खूब दिपाते हैं॥
समवसरण में चमर हमारे, भव-भव के संताप हरें।
तभी पूज्य शीतल जिनवर के, भक्त सदा सज्जाप करें ॥ 7॥

ॐ ह्रीं चमरसत्प्रातिहार्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सूरज से ज्यादा तेजस्वी, भामण्डल सब चमकाता।
दिवस रात का भेद दिखे ना, फिर भी आँखों को भाता॥
समवसरण में भामण्डल जो, सात-सात भव झलकाता।
सोने से जो बना सुनाता, शीतलप्रभु की गुण गाथा॥ 8॥

ॐ ह्रीं भामण्डलसत्प्रातिहार्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जहाँ जिनेश्वर थम जाते हैं, वहाँ सदा त्यौहार हुये।
साढ़े बारह करोड़ बाजे, बज-बज योजन पार हुये॥
समवसरण में दुन्दुभि बाजा, आक्रंदन सब का खोता।
फिर भी शोर नहीं होता पर,शीतलप्रभु का यश होता॥ 9॥

ॐ ह्रीं दुन्दुभिसत्प्रातिहार्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गुरु लघु लघुतम क्रमशः नभ में, प्रभु के सिर के ऊपर हैं।
तीन चन्द्र सम सुर-रत्नोंमय, त्रिभुवनपति के अनुचर हैं॥
समवसरण में छत्र-त्रय जो, तप्त जनों को सुख छाते।
शीतलनाथ! विधाता जग के, गीत आपके हम गाते॥ 10॥

ॐ ह्रीं छत्र-त्रयसत्प्रातिहार्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

श्री अर्हन्त देव की वाणी, खिरती जो ओंकारमयी।
सुन सकते योजन तक जिसको, सब भाषा कल्याणमयी॥
दिव्य-दिव्य ध्वनि समवसरण में, भव-भव का कल्मष धोती।
शीतलप्रभु के चरण शरण में, जैन धर्म की जय होती॥ 11॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

इन्द्रधनुष सा चमके सुखकर, मणिमय किरणों वाला जो।
उत्तम सिंह पीठ पर जिसको, धारें महा निराला जो॥
समवसरण में सिंहासन पर, उच्च कमल पर गरिमावान्।
मन उपवन को जिन सौरभ से,महकाते शीतल भगवान्॥ 12॥

ॐ ह्रीं सिंहासनसत्प्रातिहार्यमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(अष्टमंगलद्रव्य वर्णन)

श्री अरहंत देव जिनवर जी, मनोरथों से पूर्ण हुये।
पूजित केवलज्ञान प्राप्त कर, हुये-हुये सम्पूर्ण हुये॥
उसका प्रतीक द्रव्य सुमंगल, पूर्ण कलश चम-चम चमके।
शीतलप्रभु के समवसरण में, शोभित होने आ धमके॥ 13॥

ॐ ह्रीं मनोकामनापूरकमङ्गलद्रव्यपूर्णकलशमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भव्य जनों के आश्रय दाता, श्री अरहंत छत्र रूपी।
भवाताप हरने में सक्षम, सिद्धालय का भी रूपी॥
उसका प्रतीक द्रव्य सुमंगल, श्वेत छत्र चम-चम चमके।
शीतलप्रभु के समवसरण में, शोभित होने आ धमके॥ 14॥

ॐ ह्रीं शरणदायकमङ्गलद्रव्यछत्रमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अर्हत् प्रभु के दिव्य ज्ञान में, लोकालोक झलकते यों।
दूर-पास के पदार्थ सारे, दर्पण मांहि झलकते ज्यों॥
उसका प्रतीक द्रव्य सुमंगल, शुचि दर्पण चम-चम चमके।
शीतलप्रभु के समवसरण में, शोभित होने आ धमके॥ 15॥

ॐ ह्रीं सदाचारप्रदायमङ्गलद्रव्यदर्पणमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कर्म शत्रुओं को जीता तो, तीन लोक के नाथ बने।
तथा मोक्ष को पाया है सो, भक्त आपके दास बने॥
उसका प्रतीक द्रव्य सुमंगल, श्रेष्ठ चरम ढुर-ढुर ढुरके।
शीतलप्रभु के समवसरण में, शोभित होने आ धमके॥ 16॥

ॐ ह्रीं आकुलतानाशकमङ्गलद्रव्यचमरमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ज्यों झारी में बहुत नीर पर, अल्प-अल्प निकले क्रमशः।
त्यों प्रभु अनंत जानें देखें, किन्तु अल्प कहते क्रमशः॥
उसका प्रतीक द्रव्य सुमंगल, भरी-भरी झारी झलके।
शीतलप्रभु के समवसरण में, शोभित होने आ धमके॥ 17॥

ॐ ह्रीं तृप्तिकारकमङ्गलद्रव्यझारीमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

समवसरण में कमलासन से, चउ अंगुल ऊपर नभ में।
अर्हत् प्रभु ऊँचे भक्तों से, हुये प्रतिष्ठित आतम में॥
उसका प्रतीक द्रव्य सुमंगल, उज्ज्वल ठोना थिर जमके।
शीतलप्रभु के समवसरण में, शोभित होने आ धमके॥ 18॥

ॐ ह्रीं स्थिरतादायकमङ्गलद्रव्यठोनामण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिसके नीचे बैर-भाव तज, प्राणी जन हिल-मिल रहते।
विश्वशांति यश दया प्रेम की, धर्म ध्वजा उसको कहते॥
उसका प्रतीक द्रव्य सुमंगल, ध्वजा उड़े फर-फर करके।
शीतलप्रभु के समवसरण में, शोभित होने आ धमके॥ 19॥

ॐ ह्रीं यशकीर्तिविकासकमङ्गलद्रव्यध्वजामण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तीन लोक में कुशल क्षेम हो, शक्ति मिले तम पाप गले।
जीव मात्र का कल्याणक जो, शरणभूत जिनदेव भले॥
उसका प्रतीक द्रव्य सुमंगल, स्वस्तिक या विजना चमके।
शीतलप्रभु के समवसरण में, शोभित होने आ धमके॥ 20॥

ॐ ह्रीं अपशकुननाशकमङ्गलद्रव्यस्वस्तिकमण्डित श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(समवसरण की बारह सभाओं का वर्णन)

प्रथम सभा में ऋद्धि धारकर, गणधर आदिक महाव्रती।
महा तपोधन हुये विराजित, गुण गाने की लिए मति॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बंधु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 21॥

ॐ ह्रीं मुनिसमूह-अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय संसारचक्रनाशक-बोधिसमाधि प्राप्तये अर्घ्यं.....।

कल्पवासिनी-सुर ललनाएँ, प्रभु दर्शन को अकुलाएँ।
बैठें दूजी सभ्य सभा में, भाव-भक्ति से गुण गाएँ॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बन्धु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 22॥

ॐ ह्रीं कल्पवासिनीदेवीसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय आधि-व्याधि-उपाधिनाशक-परमौदारिकशरीरप्राप्तये अर्घ्यं.....।

तीजी सभा सुशीला जैसी, जहाँ आर्यिकाएँ भातीं।
तथा वहीं पर अन्य नारियाँ, राज-रानियाँ गुण गातीं॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बन्धु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 23॥

ॐ ह्रीं आर्यिकाएवंसामान्यमनुष्यनीसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय विकारीभावनाशक-परमशुक्ललेश्याप्राप्तये अर्घ्यं.....।

चौथी सभा चमकती जिसमें, ज्योतिष सुर की सुन्दरियाँ।
लगा-लगा टकटकी निरखतीं, प्रभु चरणों की पगतलियाँ॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बन्धु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 24॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषीदेवीसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय विरोध-प्रतिशोधनाशक आत्मानुशासनप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचम शांत सभा में आकर, पूर्ण यौवना झलक रहीं।
व्यंतर देवों की वनिताएँ, प्रभु दर्शन कर थिरक रहीं॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बंधु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 25॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवीसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय समस्तद्वन्द्व नाशक अष्टादशदोषरहितदशाप्राप्तये अर्घ्यं.....।

छठी सभा में छटीं-छटीं सीं, देवीं भवनवासियों कीं।
प्रभु-दर्शन से विस्मित होकर, चुप्पी हो सुरनटियों कीं॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बंधु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 26॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवीसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय समस्त विघ्नविनाशक-परमकरुणाप्राप्तये अर्घ्यं.....।

सभा सातवी भरें खचाखच, देव भवनवासी आ के।
छोड़ कुमारों सी लीलाएँ, सुशान्त हों प्रभु गुण गा के॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बंधु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 27॥

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय सर्वविधमारी-नाशक उभयसम्पदादायकपरमतीर्थप्राप्तये अर्घ्यं.....।

व्यंतर देव सभा अष्टम में, विचरण तज आसन थामें।
दिल की धड़कन रोक-रोककर, प्रभु से चरण शरण माँगें॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बंधु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 28॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय दुःखदारिद्र्य-उपद्रवनाशक परमसमताप्राप्तये अर्घ्यं.....।

नवी सभा में देव ज्योतिषी, चमक-धमक को तजकर के।
अपलक प्रभु का तेज निहारें, हृदय कमल विकसित करके॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बंधु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 29॥

ॐ ह्रीं ज्योतिषीदेवसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय वाद-विवाद-दुर्घटनानाशक परमविवेकजाग्रताय अर्घ्यं.....।

दसवी सभा कल्पनाओं के, पार मनोहर सार रही।
जहाँ कल्पवासी देवों ने, प्रभु की जय-जयकार कही॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बंधु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 30॥

ॐ ह्रीं कल्पवासीदेवसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय सकल-अपवादनाशक यशःकीर्तिप्रदायकसम्यक् श्रद्धाप्राप्तये अर्घ्यं.....।

सभा सुसौम्या ग्यारहवी में, नर चक्री जो पुरुष महा।
प्रभु की पूजन अर्चन करने, हुये इकट्ठे भाव बना॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बन्धु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 31॥

ॐ ह्रीं नरचक्रीसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय विस्मय-खेद-नाशक आत्मसंपदाप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बारहवी जो वसुन्धरा सी, महा सभा में पशु आते।
प्रभु को श्रद्धा सुमन चढ़ाकर, बैर भाव तज गुण गाते॥
समवसरण में शीतलप्रभु जी, भव्य-बंधु दैदीप्य हुये।
जीवमात्र प्रभु अर्चन करके, ऋद्धि-सिद्ध से युक्त हुये॥ 32॥

ॐ ह्रीं पशुसमूह अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय समस्तविध-परतन्त्रतानाशक-स्वतन्त्रतादायक-यथाख्यातचारित्रप्राप्तये अर्घ्यं.....।

चतुर्थ वलय जयमाला

जो संसार देह भोगों से, डरकर बनते वैरागी।
मोक्ष-महल के प्रथम चरण के, बन जाते वे अनुरागी॥
सोलह पूज्य भावनाओं को, सम्यग्दर्शन के धारी।
भा-भाकर तीर्थंकर पद के, योग्य बनें शिव अधिकारी॥ 1॥

घातिकर्म ज्यों नष्ट हुये तो, नन्तचतुष्टय गुण उभरे।
तब ही तीर्थंकर प्रकृति का, उदय हुआ तो जग सुधरे॥
और लगा जब समवसरण तो, आठों मंगल द्रव्य सजें।
सभी सभायें बारह जय-जय, धरा गगन प्रभु चरण भजें॥ 2॥

समवसरण की शीतलप्रभु की, महिमा अद्भुत योग रही।
उसका पूर्ण कथन करने में, सुरपति की मति योग्य नहीं॥
ऐसा दुर्लभ वैभव देखो, जिन-पूजा से प्राप्त हुआ।
जिसके कारण भक्त जनों का, क्रंदन कष्ट समाप्त हुआ॥ 3॥

जिन-पूजा को हेय बताना, खुद को पर को दुखदानी।
ठेस लगे ना भव्य जनों की, श्रद्धा को ओ! विज्ञानी॥
शीतल धाम हृदय में धरकर, शीतल प्रभु के भक्त बनो।
ओढ़ चुनरिया अब केशरिया, भावभक्ति शिव पंथ चुनो॥ 4॥

समवसरण में सूर्य से, हुये नाथ दैदीप्य।
और हमारी भक्ति यों, ज्यों सूरज को दीप॥

ॐ ह्रीं लोकत्रय अर्चितसमवसरणस्थ श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भूत-भविष्यत्-वर्तमानसम्बन्धिसकलचिन्तासाम्राज्यनाशक आत्मसंतुष्टिप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, हे शीतल! जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं विश्वसंतापहराय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

मनमानी मन ना करे, तजने मनस्-तरंग।
जयमाला से गीत का, शीतल बनें अनंग॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

पद्म गुल्म जो वत्स देश का, न्यायी राज्य नरेश।
बसन्त ऋतु का हुआ समागम, तो क्रीड़ामय देश॥
किन्तु कहीं ऋतु विला गयी तो, व्याकुल दुखी अपार।
राजा को वैराग्य हुआ तब, दिया पुत्र को भार॥ 1॥

पद्मगुल्म आनंद नाम के, मुनि के जाकर पास।
सकल परिग्रह त्याग देह से, विमुख धरे संन्यास॥
रत्नत्रयमय ज्ञान ध्यान तक, सोलहकारण भाव।
तीर्थंकर के नामकर्म का, किया बंध सद्भाव॥2॥

तथा आयु के अन्त समय में, समाधि-मरण सँभाल।
आरण नामक स्वर्ग भोग को, भोगे इंद्र विशाल॥
आयु इंद्र की पूर्ण भोग कर, लिया भद्रपुर जन्म।
भद्दलपुर या नगर विदिशा, हुआ आज का धन्य॥ 3॥

गर्भ जन्म तप और ज्ञान के, चार हुये कल्याण।
नेमिनाथ का समवसरण भी, लगा यहीं पर आन॥
इसी विदिशा की धरती पर, पावन वर्षायोग।
महावीर प्रभु किये तभी जो, कण-कण वंदन योग्य॥ 4॥

गुरुवर समंतभद्र यहीं पर, बजा गये जिन ढोल।
लिये समाधि इसी धरा पर, भट्टारक अनमोल॥
यहीं उदयगिरि जहाँ गुफाएँ, चरण चिह्न अवशेष।
जहाँ एक मंदिर में शोभित, पारसनाथ जिनेश॥ 5॥

शिलालेख भी वहीं गुफा में, दिये पुरातन ज्ञान।
तपश्चरण के योग्य धरा यह, कण-कण में भगवान्॥
तभी दिये विद्यागुरुवर जी, भक्तों को आशीष।
समवसरण की अद्भुत रचना, जिसके शीतल ईश॥ 6॥

चौथा काल यहाँ पर था तब, किये सुरों ने पर्व।
गुरु-कृपा से अब भक्तों ने, उत्सव पाये सर्व॥
क्योंकि यहाँ शीतल भगवन् ने, की थी क्रीड़ा बाल।
अर्थ-काम पुरुषार्थ साधकर, त्यागे जग जंजाल॥ 7॥

धर्म-मोक्ष पुरुषार्थ साधकर, धारा था वैराग्य।
वाह! वाह! क्या राज्य त्यागना केशलौंच सौभाग्य॥
यथाजात बन बने निरम्बर, तीर्थंकर जिनरूप।
समवसरण को छोड़ मोक्ष को, पा बैठे चिद्रूप॥ 8॥

नाथ! आपकी महिमा गाने, सुरपति नहीं समर्थ।
सुर-छंदों के ज्ञान बिना हम, किये भक्ति बिन शर्त॥
हमें भक्ति फल इतना दे दो, सदा रहे प्रभु ध्यान।
पद चिह्नों पर चलकर होवे, 'सुव्रत' का कल्याण॥ 9॥

(दोहा)

जयमाला के नाम से, गाये प्रभु के गीत।
समवसरण सा सुख मिले, यही भक्ति की रीत॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

शीतलजिन! शीतल करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, हे! शीतल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

॥ इति श्री शीतलनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

पार्श्वनाथ पदधाम में, 'सिलवानी' के ग्राम।
शीतलनाथ विधान का, शुरू किया शुभ काम॥
शांतिनाथ की छाँव में, 'विद्यागुरु' वरदान।
'रामटेक' में पूर्ण यह, 'सुव्रत' लिखे विधान॥
मंगल पाँच अगस्त को, दो हजार सन आठ।
पूर्ण हुआ कर्तव्य यह, बढ़े धर्म का ठाठ॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

शीतल जिनवर के गुण गाओ, होऽऽऽ
शीतल जिनवर के गुण गाओ, सादर करो प्रणाम हो।
झूम-झूम के करो आरती, तन-मन शीतलधाम हो॥

दसवें तीर्थंकर कहलाते, शीतल करते दशों दिशा[2]
दसों धर्म-ध्यानों के साधन, बदलो दशा-दिशा विदिशा[2]
तृषा-मृषा हिंसा की हर लो, होऽऽऽ
तृषा-मृषा हिंसा की हर लो, गम की निशा विराम हो।
झूम-झूम के.....॥ 1॥
दीप-ज्योति ज्यों हरे अँधेरा, राह उजाला भी देती[2]
वैसे नाथ! आरती तुमरी, पाप-अंध गम हर लेती[2]
जलें दीप से दीप हृदय के, होऽऽऽ
जलें दीप से दीप हृदय के, नहीं वैर का नाम हो।
झूम-झूम के.....॥ 2॥
पूजक पर तुम खुश ना होते, ना निंदक पर रोष करो[2]
फिर भी सुन लो अरज हमारी 'सुव्रत' के सब दोष हरो[2]
हमें भक्ति फल बस यह दे दो, होऽऽऽ
हमें भक्ति फल बस ये दे दो, होठों पर प्रभु नाम हो।
झूम-झूम के.....॥ 3॥